कक्षा-9

विषय-हिन्दी

70 अंकों का एक प्रश्नपत्र होगा-समय तीन घण्टे निर्धारित

1-(क) हिन्दी गद्य के विकास का संक्षिप्त परिचय (भारतेन्दु युग तथा द्विवेदी युग) 5

(ख) हिन्दी पद्य के विकास का संक्षिप्त परिचय-आदिकाल, मध्यकाल (केवल भक्तिकाल) 5

2-गद्य हेतु निर्धारित पाठ्य वस्तु से- 2+4+2=8

सन्दर्भ-

रेखांकित अंश की व्याख्या-

तथ्यपरक प्रश्न का उत्तर-

(पाठ-बात, मंत्र, गुरूनानक, देव, गिल्लू, स्मृति, निष्ठामूर्ति कस्तूरबा, ठेले पर हिमालय)

3-काव्य हेतु निर्धारित पाठ्य वस्तु से- 2+4+2=8

सन्दर्भ-

व्याख्या-

काव्य सौन्दर्य-

(कबीर, मीरा, रहीम, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, मैथलीशरण गुप्त, जयशंकर प्रसाद, सूर्यकान्त त्रिपाठी ''निराला'', सोहन लाल द्विवेदी, हरिवंश राय बच्चन, नागार्जुन, केदार नाथ अग्रवाल)

4-संस्कृत के निर्धारित पाठ्य वस्तु से- 1+4=5

(गद्यांश अथवा श्लोक का सन्दर्भ सहित अनुवाद)

सन्दर्भ-

अनुवाद-

(पाठ-वन्दना, सदाचार, पुरूषोत्तमः रामः, सिद्धिमन्त्रः, सुभाषितानि, परमहंस रामकृष्णः, कृष्णः गोपालनन्दनः)

5-निर्धारित एकांकी से-(कथानक, चरित्र-चित्रण एवं तथ्याधारित प्रश्न) 3

(एकांकी-दीपदान, नये मेहमान, व्यवहार, लक्ष्मी का स्वागत, सीमा रेखा)

6-निर्धारित पाठकों के लेखकों तथा कवियों का जीवन परिचय एवं रचनाएं- 3+3=6

7-(1) पाठ्य पुस्तक से एक श्लोक- (जो प्रश्नपत्र में न आया हो)	2
(2) संस्कृत के निर्धारित पाठों से पाठों पर आधारित दो प्रश्नों का उत्तर संस्कृत में (अति लघु उत्तरीय)	2
8-काव्य सौन्दर्य के तत्व-	2+2+2=6
1-रस-श्रृंगार एवं वीर (स्थायीभाव, परिभाषा, उदाहरण, पहचान)	
2-छन्द-चौपाई एवं दोहा-लक्षण, उदाहरण।	
3-अलंकार-शब्दालंकार, अनुप्रास, यमक, श्लेष-परिभाषा, उदाहरण, पहचान।	
9-हिन्दी व्याकरण तथा शब्द रचना-	2+2+2+2=8
क-वर्तनी तथा विराम चिन्ह	
ख-शब्द रचना-तद्भव, तत्सम्, विलोम, पर्यायवाची	
ग-समास-अव्ययीभाव, तत्पुरुष (परिभाषा, उदाहरण)	
घ-मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ-अर्थ एवं वाक्य प्रयोग	
10-संस्कृत व्याकरण-	2+2+2=6
क-सन्धि-दीर्घ, गुण (परिभाषा, उदाहरण, पहचान)	
ख-शब्द रूप-राम, हरि, भानु, अस्मद्	
ग-धातुरूप-गम्, भू, कृ, (लट्, लोट्, विधिलिंग, लङ, तथा लृट् लकार)	
11-क-हिन्दी के दो सरल वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद	2
ख-पत्र लेखन (प्रार्थना-पत्र)	4

निर्धारित पाठ्य वस्तु-(गद्य)

पाठ	लेखक
बात	प्रताप नारायण मिश्र
मंत्र	प्रेमचन्द्र
गुरूनानक देव	हजारी प्रसाद द्विवेदी
गिल्लू	महादेवी वर्मा
स्मृति	श्रीराम शर्मा
निष्ठामूर्ति कस्तूरबा	काका कालेलकर
ठेले पर हिमालय	धर्मवीर भारती

निर्धारित पाठ्य वस्तु-(काव्य)

कबीर	साखी
मीराबाई	पदावली
रहीम	दोहा
भारतेन्दु हरिश्चन्द्र	प्रेम माधुरी

मैथिलीशरण गुप्त	पंचवटी
जयशंकर प्रसाद	पुनर्मिलन
सूर्यकान्त त्रिपाठी "निराला"	दान
सोहन लाल द्विवेदी	उन्हें प्रणाम
हरिवंश राय बच्चन	पथ की पहचान
नागार्जुन	बादल को घिरते देखा
केदार नाथ अग्रवाल	अच्छा होता, सितार-संगीत की रात

निर्धारित पाठ्य वस्तु-(संस्कृत)

वन्दना, सदाचारः, पुरुषोत्तमः रामः, सिद्धिमन्त्रः, सुभाषितानि, परमहंस-रामकृष्ण, कृष्णः गोपाल नन्दनः

निर्धारित एकांकी-

दीपदान	राम कुमार वर्मा
नये मेहमान	उदय शंकर भट्ट
व्यवहार	सेठ गोविन्द दास
लक्ष्मी का स्वागत	उपेन्द्र नाथ "अश्क"
सीमा रेखा	विष्णु प्रभाकर

गद्य–

1–रवीन्द्र नाथ टैगोर की कहानी– ''तोता'' को सम्मिलित किया गया:–

तोता

एक था तोता। वह बड़ा मूर्ख था। गाता तो था, पर शास्त्र नहीं पढ़ता था। उछलता था, फुदकता था, उड़ता था, पर यह नहीं जानता था कि कायदा–कानून किसे कहते हैं।

राजा बोले, "ऐसा तोता किस काम का? इससे लाभ तो कोई नहीं, हानि जरूर है। जंगल के फल खा जाता है, जिससे राजा–मण्डी के फल–बाजार में टोटा पड़ जाता है।"

मंत्री को बुलाकर कहा, "इस तोते को शिक्षा दो!"

(2)

तोते को शिक्षा देने का काम राजा के भानजे को मिला। पण्डितों की बैठक हुई। विषय था, "उक्त जीव की अविद्या का कारण क्या है?" बड़ा गहरा विचार हुआ। सिद्धान्त ठहरा : तोता अपना घोंसला साधारण खर–पात से बनाता है। ऐसे आवास में विद्या नहीं आती। इसलिए सबसे पहले तो यह आवश्यक है कि इसके लिए कोई बढ़िया–सा पिंजरा बना दिया जाय। राज–पण्डितों को दक्षिणा मिली और वे प्रसन्न होकर अपने–अपने घर गये।

(3)

सुनार बुलाया गया। वह सोने का पिंजरा तैयार करने में जुट पड़ा। पिंजरा ऐसा अनोखा बना कि उसे देखने के लिए देश–विदेश के लोग टूट पड़े। कोई कहता, "शिक्षा की तो इति हो गयी।" कोई कहता, "शिक्षा न भी हो तो क्या, पिंजरा तो बना। इस तोते का भी क्या नसीब है।"

1 ङ

BYJU'S
The Learning App

सुनार को थैलियाँ भर—भरकर इनाम मिला। वह उसी घड़ी अपने घर की ओर रवाना हो गया। पण्डित जी तोते को विद्या पढ़ाने बैठे। नस लेकर बोले, "यह काम थोड़ी पोथियों का नहीं है।"

राजा के भानजे ने सुना। उन्होंने उसी समय पोथी लिखने वालों को बुलवाया। पोथियों की नकल होने लगी। नकलों के और नकलों की नकलों के पहाड़ लग गये। जिसने, भी देखा, उसने यही कहा कि, "शाबाश! इतनी विद्या के धरने को जगह भी नहीं रहेगी।"

नकलनवीसों को लद्दू बैलों पर लाद—लादकर इनाम दिये गए। वे अपने—अपने घर की ओर दौड़ पड़े। उनकी दुनिया में तंगी का नाम—निशान भी बाकी न रहा।

दामी पिंजरे की देख—रेख में राजा के भानजे बहुत व्यस्त रहने लगे। इतने व्यस्त कि व्यस्तता की कोई सीमा न रही। मरम्मत के काम भी लगे ही रहते। फिर झाडू—पोंछ और पालिश की धूम भी मची ही रहती थी। जो ही देखता, यही कहता कि "उन्नति हो रही है।"

इन कामों पर अनेक—अनेक लोग लगाये गये और उनके कामों की देख—रेख करने पर और भी अनेक—अनेक लोग लगे। सब महीने—महीने मोटे—मोटे वेतन ले—लेकर बड़े—बड़े सन्दूक भरने लगे।

वे और उनके चचेरे—ममेरे—मौसेरे भाई—बंद बड़े प्रसन्न हुए और बड़े—बड़े कोठों—बालाखानों में मोटे—मोटे गद्दे बिछाकर बैठ गये।

(4)

संसार में और—और अभाव तो अनेक हैं, पर निन्दकों की कोई कमी नहीं है। एक ढूँढ़ो हजार मिलते हैं। वे बोले, "पिंजरे की तो उन्नति हो रही है, पर तोते की खोज—खबर लेने वाला कोई नहीं है।

बात राजा के कानों में पड़ी। उन्होंने भानजे को बुलाया और कहा, "क्यों भानजे साहब, यह कैसी बात सुनाई पड़ रही है।?"

भानजे ने कहा, "महाराज, अगर सच—सच बात सुनना चाहते हों तो सुनारों को बुलाइये, पण्डितों को बुलाइये, नकनवीसों को बुलाइये, मरम्मत करने वालों को और मरम्मत की देखभाल करने वालों को बुलाइये। निन्दकों को हलवे—मॉड़े में हिस्सा नहीं मिलता, इसीलिए वे ऐसी ओछी बात करते हैं।"

जवाब सुनकर राजा ने पूरे मामले को भली—भॉति और साफ—साफ तौर से समक्ष लिया। भानजे के गले में तत्काल सोने के हार पहनाये गये।

(5)

राजा का मन हुआ कि एक बार चलकर अपनी आँखों से यह देखें कि शिक्षा कैसे धूमधड़ाके से और कैसी बगटुट तेज़ी के साथ चल रही है। सो, एक दिन वह अपने मुसाहबों, मुँहलगों, मित्रों और मन्त्रियों के साथ आप ही शिक्षा—शाला में आ धमके।

उनके पहुँचते ही ड्योढ़ी के पास शंख, घड़ियाल, ढोल, तासे, खुरदक, नगाड़े, तुरहियाँ, भेरियाँ, दमामें, काँसे, बाँसुरिया, झाल, करताल, मृदंग, जगझम्प आदि—आदि आप ही आप बज उठे।

पण्डित गले फाड़—फाड़कर और बूटियां फड़का—फड़काकर मन्त्र—पाठ करने लगे। मिस्त्री, मजदूर, सुनार, नकलनवीस, देखभाल करने वाले और उन सभी के ममेरे, फुफेरे, चचेरे, मौसेरे भाई जय—जयकार करने लगे।

भानजा बोला, "महाराज, देख रहे हैं न?"

महाराज ने कहा, "आश्चर्य! शब्द तो कोई कम नहीं हो रहा!

भानजा बोला, "शब्द ही क्यों, इसके पीछे अर्थ भी कोई कम नहीं!" राजा प्रसन्न होकर लौट पड़े। ड्योढ़ी को पार करके हाथी पर सवार होने ही वाले थे कि पास के झुरमुट में छिपा बैठा निन्दक बोल उठा, "महाराज आपने तोते को देखा भी है?" राजा चौंके। बोले, "अरे हाँ! यह तो मैं बिलकुल भूल ही गया था! तोते को तो देखा ही नहीं!" लौटकर पण्डित से बोले, "मुझे यह देखना है कि तोते को तुम पढ़ाते किस ढ़ंग से हो।" पढ़ाने का ढ़ंग उन्हें दिखाया गया। देखकर उनकी खुशी का ठिकाना न रहा। पढ़ाने का ढ़ंग तोते की तुलना में इतना बड़ा था कि तोता दिखाई ही नहीं पड़ता था। राजा ने सोचा : अब तोते को देखने की जरूरत ही क्या है? उसे देखे बिना भी काम चल सकता है।! राजा ने इतना तो अच्छी तरह समझ लिया कि बंदोबस्त में कहीं कोई भूल—चूक नहीं है। पिंजरे में दाना—पानी तो नहीं था, थी सिर्फ शिक्षा। यानी ढेर की ढेर पोथियों के ढेर के ढेर पन्ने फाड़—फाड़कर कलम की नोंक से तोते के मुँह में घुसेड़े जाते थे। गाना तो बन्द हो ही गया था, चीखने—चिल्लाने के लिए भी कोई गुंजायश नहीं छोड़ी गयी थी। तोते का मुँह ठसाठस भरकर बिलकुल बन्द हो गया था। देखने वाले के रोंगटे खड़े हो जाते।

BYJU'S
The Learning App

अब दुबारा जब राजा हाथी पर चढ़ने लगे तो उन्होंने कान–उमेठू सरदार को ताकीद कर दी कि "निन्दक के कान अच्छी तरह उमेठ देना!"

(6)

तोता दिन पर दिन भद्र रीति के अनुसार अधमरा होता गया। अभिभावकों ने समझा की प्रगति काफी आशाजनक हो रही है। फिर भी पक्षी–स्वभाव के एक स्वाभाविक दोष से तोते का पिंड अब भी छूट नहीं पाया था। सुबह होते ही वह उजाले की ओर टुकुर–टुकुर निहारने लगता था और बड़ी ही अन्याय भरी रीति से अपने डैने फड़फड़ाने लगता था। इतना ही नहीं, किसी–किसी दिन तो ऐसा भी देखा गया कि वह अपनी रोगी चोंचों से पिंजरे की सलाखें काटने में जुटा हुआ है।

कोतवाल गरजा, "यह कैसी बेअदबी है।"

फौरन लुहार हाजिर हुआ। आग, भाथी और हथौड़ा लेकर।

वह धम्माधम्म लोहा–पिटाई हुई कि कुछ न पूछिये! लोहे की सांकल तैयार की गई और तोते के डैने भी काट दिये गये।

राजा के सम्बन्धियों ने हाँड़ी–जैसे मुँह लटका कर और सिर हिलाकर कहा, "इस राज्य के पक्षी सिफ बेवकूफ ही नहीं, नमक–हराम भी है।"

और तब, पण्डितों ने एक हाथ में कलम और दूसरे हाथ में बरछा ले–लेकर वह कांड रचाया, जिसे शिक्षा कहते हैं।

लुहार की लुहसार बेहद फैल गयी और लुहारिन के अंगों पर सोने के गहने शोभने लगे और कोतवाल की चतुराई देखकर राजा ने उसे सिरोपा अदा किया।

(7)

तोता मर गया। कब मरा, इसका निश्चय कोई भी नहीं कर सकता। कमबख्त निन्दक ने अफवाह फैलायी कि "तोता मर गया!"

राजा ने भानजे को बुलवाया और कहा, "भानजे साहब यह कैसी बात सुनी जा रही है?"

भानजे ने कहा, "महाराज, तोते की शिक्षा पूरी हो गई है!"

राजा ने पूछा, "अब भी वह उछलता–फुदकता है?"

भानजा बोला, अजी, राम कहिये!"

(8)

"अब भी उड़ता है?"

"ना; कतई नहीं!"

"अब भी गाता है?"

"नहीं तो!"

"दाना न मिलने पर अब भी चिल्लाता है?'

"ना!"

राजा ने कहा, "एक बार तोते को लाना तो सही, देखूँगा जरा!"

तोता लाया गया। साथ में कोतवाल आये, प्यादे आये, घुड़सवार आये।

राजा ने तोते को चुटकी से दबाया। तोते ने न हाँ की, न हूँ की। हाँ, उसके पेट में पोथियों के सूखे पत्ते खड़खड़ाने जरूर लगे।

बाहर नव–बसन्त की दक्षिणी बयार में नव–पल्लवों ने अपने निश्वासों से मुकुलित वन के आकाश को आकुल कर दिया। (गुरुदेव रवीन्द्र नाथ टैगौर)

2–"सड़क सुरक्षा एवं यातायात के नियम'' नामक पाठ को सम्मिलित किया गया:–

सड़क सुरक्षा एवं यातायात के नियम

'यातायात' दो शब्द से मिलकर बना हैय "यात+आयात" जिसका अर्थ है आना–जाना। प्राचीनकाल से ही मानव–सभ्यता की समस्त जीवन–शैली आवागमन पर ही निर्भर है। आधुनिक काल में बढ़ते संसाधन एवं विकास क्षेत्र को देखते हुए देश में ही नहीं, सम्पूर्ण विश्व में यातायात से सम्बन्धित महत्वपूर्ण नियम बनाये गये हैं, क्योंकि इससे न केवल यातायात सुगम बनता है बल्कि सड़क दुर्घटना से होने वाले भयावह खतरों से बचा जा सकता है। आम जनता खासतौर से युवा–वर्ग के लोगों में अधिक जागरूकता लाने के लिये इसे शिक्षा, सामाजिक जागरूकता इत्यादि आयामों से जोड़ा जाना प्रासंगिक हैय क्योंकि विश्व में सड़क–यातायात में मौतें और जख्मी होना एक साधारण घटना हो गयी है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार प्रति वर्ष 10 लाख से अधिक सड़क–हादसों के शिकार व्यक्तियों की मौत हो जाती है।

BYJU'S The Learning App

हादसों से बचने के लिए यातायात के नियमों का पालन करना अति आवश्यक है। इसके ज्ञान के अभाव में एवं सुचारू रूप से पालन न करने के कारण भारत में प्रत्येक वर्ष 1,40,000 से अधिक व्यक्ति सड़क–दुर्घटना में मारे जाते हैं। ऐसी विकट परिस्थितियों का अनुमान लगाया जा सकता है कि विश्व भर के कुल वाहनों में से केवल एक प्रतिशत ही वाहन भारत में है, जबकि विश्व की कुल सड़क–दुर्घटना में से 10ः हादसे भारत में होते हैं। "विडम्बना यह है कि कोई नियम तब तक अपने लक्ष्य को नहीं प्राप्त कर सकता जब तक पालनकर्ता उसे आत्मसात करने की कोशिश न करे''।

सड़क यातायात के नियम विवेकपूर्ण होते हैं, और उनका विवेकपूर्ण पालन करना भी आवश्यक होता है। सड़क पर चलने वालों की सुरक्षा के लिए अनेक कानून एवं नियम बनाए गए हैं, जिसका पालन करना प्रत्येक नागरिक का दायित्व होता है, जिससे हर कोई सुरक्षित घर पहुँच सके। यदि हम इन नियमों का उल्लंघन करते हैं तो स्वयं के साथ–साथ दूसरों को भी हानि पहुँचाते हैं। यातायात के प्रमुख नियमों को सीखने की सुगमता के अनुसार दो भागों में विभक्त कर सकते हैं– (1) सुरक्षा से सम्बन्धित यातायात के नियम एवं सावधानियाँ; (2) वाहन चलाने के नियम एवं सावधानियाँ।

पैदल, साइकिल एवं रिक्शा चालकों को हमेशा अपनी लेन में अर्थात् बायीं तरफ रहना चाहिए एवं सड़क पार करते समय दायें–बायें देखने के बाद ही आगे बढ़ना चाहिए। व्यस्त सड़कों पर हमेशा जेब्रा–क्रासिंग का प्रयोग करना चाहिए तथा क्रास करते समय कभी यह न सोचना चाहिए कि वाहन चालक उसे देख रहा है। सड़क की संरचनात्मक ढ़ाँचागत सुविधाओं का पूरा उपयोग हो इसलिए सब–वे (तल मार्ग), फुट ओवर ब्रिज सबका पालन नियमगत करना आवश्यक होता है। शार्टकट या आसान विकल्प खोजना खतरनाक हो सकता है।

पैदल यात्रियों को सड़क पार करते समय मोटर–वाहनों एवं अपने बीच पर्याप्त दूरी रखना चाहिए और पार्क की गई या खड़ी गाड़ियों के बीच से रास्ता नहीं बनाना चाहिए। सड़क के खतरों से अधिकांशतः बच्चे ज्यादा प्रभावित होते हैं, जिसमें हमेशा वाहन चालक की गलती नहीं होती है, क्योंकि बच्चों की लापरवाही और जागरूकता की कमी से भी सड़क दुर्घटना की सम्भावना बढ़ जाती है। बच्चे हमेशा बड़ों का अनुसरण करते हैं इसलिए उनके सामने विवशता में भी सड़क के नियम का उल्लंघन नहीं करना चाहिए और उन्हें "रूके, देखें, सुने, सोचे" का मूल मंत्र बताना व पालन कराना अति आवश्यक होता है।

वाहन चलाते समय यातायात नियम एवं सुरक्षा की जानकारी के साथ–साथ वाहन चलाने की योग्यता, उम्र एवं परिपक्वता की जानकारी भी आवश्यक होती है। सड़कों पर तीव्रता से बढ़ती दुपहिया और चौपहिया वाहनों की भीड़ को व्यवस्थित करने एवं सड़क पर आवश्यक जगहों पर लगे सड़क नियम से (यातायात नियम) सम्बन्धित महत्वपूर्ण संकेतों की जानकारी रखना भी आवश्यक होता है क्योंकि भारत में वर्ष 2011 की अवधि में लगभग 4.9 लाख सड़क दुर्घटनाएँ हुई हैं, जिसमें 142485 लोगों की मृत्यु हुई। वाहन चलाते समय कुछ मानवीय भूले होती है जिससे दुर्घटना हो जाती है, इसलिए ऐसे तथ्यों पर गहन विवेचना की आवश्यकता है। बहुत तेज गति से वाहन चलाना, नशे में गाड़ी चलाना, चालक की ध्यान भटकाने वाली चीजें, लालबत्ती का उल्लंघन करना, सीट–बेल्ट और हेलमेट जैसे सुरक्षा साधनों की उपेक्षा, लेन ड्राइविंग का पालन न करना और गलत तरीके से ओवरटेकिंग करना आदि कारणों से सड़क–दुर्घटना की सम्भावना बढ़ जाती है। इसलिए उपरोक्त निर्देशित समस्त बिन्दुओं पर ध्यान–केन्द्रित करते हुए सावधानी बरतनी चाहिए। वर्तमान में वाहन चलाते समय मोबाइल फोन के बढते प्रयोग के कारण दुर्घटनाएँ बढ़ी है। सुरक्षा की दृष्टि से वाहन चलाते समय मोबाइल फोन का प्रयोग नहीं करना चाहिए।

सभी को पीछे छोड़ने की प्रवृत्ति प्रायः हर किसी में होती हैं, गति में तीव्रता दुर्घटना का जोखिम और दुर्घटना के दौरान चोट की गम्भीरता बढ़ाती है। खुशी के मौके या शौक के कारण लोगों में नशे की प्रवृत्ति होती है; परन्तु नशे की हालत में गाड़ी चलाना, दुर्घटना में वृद्धि करता है। कभी–कभी गाड़ी चलाते समय मोबाइल फोन, होर्डिंग पर ध्यान चले जाना जैसी क्रियाएँ मस्तिष्क–संकेन्द्रक को प्रभावित करता है, इसलिए गाड़ी चलाते समय ऐसी वस्तुओं से दूरी बना लेनी चाहिए। कुछ अन्य बातें भी इसमें शामिल होती है, जैसे गाड़ी का शीशा समायोजित करना, वाहन में स्टीरियो एवं रेडियों का चलाना, सड़क पर जानवरों का आ जाना, विज्ञापन या सूचना पट्ट आदि चीजों से चालक को अपना ध्यान नहीं भंग करना चाहिए और मार्ग–परिवर्तन एवं ध्यान हटाने वाली बाहरी चीजे देखने के दौरान सुरक्षित रहने के लिए वाहन गति धीमी रखने की आवश्यकता होती है।

वाहन चलाते समय चौराहों पर लगी बत्तियों एवं चौराहों पर किस.किस नियम की आवश्यकता होती है उस पर चर्चा जरूरी है। लाल बत्ती संकेत देती है कि वाहन को रूकना है; पीली बत्ती का संकेत

BYJU'S The Learning App

है कि चलने के लिए तैयार होना एवं अन्त में हरी बत्ती का संकेत होता है अब आगे बढ़ना या चलना है। इसके साथ ही चौराहे पर बायें मुड़ना (लेफ्ट टर्न) हमेशा खुला रहने का मतलब है कि बायीं तरफ मुड़ने के लिए या जाने के लिए रूकने की आवश्यकता नहीं है; परन्तु ध्यान रखना होता है कि चौराहे पर हमारी दाहिनी तरफ से आने वाले वाहन से भी हमें बायीं तरफ रहना है और जब तक पर्याप्त जगह न मिले हमें दाहिनी लेन में नहीं आना चाहिए। परिवहन विभाग से जारी किए गये सड़क से सम्बन्धित कई महत्त्वपूर्ण संकेत निर्धारित किए गये हैं, जिसकी जानकारी रखने एवं पालन करने से यातायात को सुगम, सहज एवं सुखद बनाया जा सकता है। सामान्य रूप से उसे दो भागों में बाँटा गया है, ''लिखित संकेत एवं चित्र संकेत''। लिखित संकेतों में शब्दों, अंकों तथा वाक्यों का प्रयोग करके आवश्यक बातें बतायी जाती हैं। लिखित संकेतों का इतिहास बहुत पुराना है पर इनकी संख्या बहुत कम है। 'मील के पत्थर' 'होर्डिंग द्वारा दिशा–निर्देश', 'गंतव्य स्थानों का ज्ञान कराना' तथा सड़क–यातायात से सम्बन्धित अचानक कोई परिवर्तन' आदि की जानकारी देने के लिए लिखित संकेतों का प्रयोग करते हैं कभी–कभी कुछ मार्गों पर यातायात संकेत के साथ 'मोड़', 'तीव्र–मोड़', 'सड़क की मरम्मत हो रही है', कृपया धीरे चलें, सावधान बच्चे हैं" जैसे लिखित संकेतों के माध्यम से भी सावधानी बरतने के लिए आगाह किया जाता है। प्रयोजन के आधार पर चित्र संकेतों को तीन श्रेणी में प्रदर्शित करते हैं–

(क) खतरे की चेतावनी देने वाले संकेत,
(ख) विनियामक संकेत तथा
(ग) सूचनात्मक संकेत।

चित्र संकेतों का सबसे बड़ा लाभ यह है कि उन्हें आसानी से देखा, समझा, और पालन किया जा सकता है, प्रत्येक वाहन चालक को निर्देशित चिह्न को समझकर ही वाहन चलाना चाहिए। परिवहन विभाग द्वारा उक्त चिह्नों का सही ज्ञान कराकर ही वाहन–चालक को वाहन चलाने के लिए ड्राइविंग–लाइसेंस (चालन अनुमति पत्र) दिया जाता है। परन्तु उसका उचित पालन ही यातायात को सुगम एवं सुखदायी बनाता है। चित्र संकेतों के आकार और रंग अलग–अलग होते हैं। लाल रंग के "गोलाकार संकेत" आदेशात्मक होते हैं; लाल रंग के "त्रिकोणीय संकेत" चेतावनी देने वाले होते हैं और नीले रंग के "आयाताकार संकेत" सूचना प्रदायक होते हैं।

यातायात के संकेत "भारतीय रोड–कांग्रेस" (आई0आर0सी0) द्वारा जारी किये जाते हैं तथा संकेत चिन्हों और नियमों का प्रयोग कर बनाये जाते हैं, जिसका अनुपालन देश के सभी नागरिकों से करने की अपेक्षा की जाती है।

यातायात के नियमों का पालन करने में कभी–कभी अन्य गतिरोध उत्पन्न हो जाते हैं क्योंकि अधिकांशतः लोग नियमों की अनदेखी करके अतिशीघ्रता करने की कोशिश करते हैं, जिसके कारण सड़कों पर जाम की स्थिति बन जाती है एवं यातायात बाधित होने लगता है। ऐसी परिस्थिति में कभी–कभी विकल्प के अभाव में जनता यातायात के नियमों को तोड़ने के लिए विवश हो जाती है।

परिवहन नियम के अनुसार उक्त समस्याओं से निपटने के लिए विवेकपूर्ण तथ्यों का अनुपालन करना चाहिए जिससे कोई दुर्घटना या परेशानी का सामना न करना पड़े। उल्लिखित परिस्थिति में कभी–कभी सड़क पर झगड़ा (रोड रेज) की सम्भावना बन जाती है जिसको विविध संकेतों से पहचानकर बचा जा सकता है। उदाहरणार्थ–उत्तेजक वाहन चलाना, अचानक तीव्रता लाना और ब्रेक लगाना, सड़कों पर टेढ़ी–मेढ़ी (जिकजैक), ड्राइविंग करना; तीव्र गति में बार–बार लेन बदलनाय अपनी लेन से अचानक दूसरे वाहन के आगे अपना वाहन लाना, जान बूझकर अन्य वाहनों के लिए अवरोध उत्पन्न करना, दूसरे वाहन को पीछे से या बगल से टक्कर मारना; वाहन को दूसरे वाहन के पीछे एकदम से सटाकर चलानाय निरन्तर हार्न बजाना व लाइट फ्लैश करना। वाहन–चालक को समझदारी दिखाते हुए अपने बचाव के लिए ऐसी स्थिति में उलझने से बचने की कोशिश करनी चाहिए।

यातायात के नियम पालनार्थ भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण ने सड़क–सुरक्षा में सुधार करने के लिए विभिन्न कदम उठाये हैंय जैसे– सड़क फर्नीचर, सड़क चिन्ह, (रोड मार्किंग) उन्नत परिवहन प्रणाली का प्रयोग करते हुए राजमार्ग यातायात प्रबन्धन प्रणाली आरम्भ करना, निर्माण कार्य के दौरान ठेकेदारों में अनुशासन को बनाए रखना, चुनिन्दा क्षेत्रों में सड़क सुरक्षा ऑडिट इत्यादि। असंगठित क्षेत्रों में भारी मोटर वाहनों के लिए 'पुनश्चर्या प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाना, 'राज्यों में ड्राइविंग प्रशिक्षण स्कूलों की स्थापना, दृश्य–श्रव्य तथा प्रिण्ट माध्यमों के द्वारा सड़क सुरक्षा जागरूकता पर प्रचार अभियान, सड़क सुरक्षा के क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य के लिए स्वैच्छिक संगठनों/व्यक्तियों के लिए राष्ट्रीय पुरस्कारों का संचालन, वाहनों में सुरक्षा–मानकों को और अधिक सशक्त बनाना, जैसे– 'सीट–बेल्ट', 'पावर–स्टेयरिंग', 'रियर–व्यू–मिरर' इत्यादि। राष्ट्रीय राजमार्ग दुर्घटना सहायता सेवा–योजना के अन्तर्गत विभिन्न राज्य

BYJU'S The Learning App

सरकारों और सरकारी संगठनों को क्रेन तथा एम्बुलेन्स उपलब्ध कराना। राष्ट्रीय राजमार्गों को 2—लेन से 4—लेन, 4—लेन से 6—लेन करने का प्रावधान तथा युवा वर्ग में जागरूकता (सड़क—सुरक्षा) का प्रचार करने की प्रक्रिया को भी शामिल करना है।

अन्ततः यातायात के नियमों के बहुआयामी उद्देश्यों को ध्यान में रखकर प्रत्येक नागरिक का कर्त्तव्य बनता है कि वह परिवहन विभाग द्वारा बनाए गये यातायात से सम्बन्धित समस्त सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक संकेतकों एवं नियमों का पालन कर देश की समृद्धि एवं विकास में अहम योगदान देने का प्रयास करें, जिसमें हमारा देश, समाज एवं परिवार सुरक्षित रहकर विकास की पराकाष्ठा को प्राप्त करने में सफल रहे।

(यह प्रकरण एक पाठ के रूप में कक्षा—9 में जोड़ा जायेगा, पर इससे व्याख्यात्मक, प्रसंग और संदर्भ आधारित प्रश्न नहीं पूछे जायेंगे।)

पद्य

1—संत रैदास जी की रचना— ''प्रभुजी तुम चन्दन हम पानी'' को सम्मिलित किया गयाः—

प्रभु जी तुम चंदन हम पानी। जाकी अंग-अंग बास समानी॥
प्रभु जी तुम घन बन हम मोरा। जैसे चितवत चंद चकोरा॥
प्रभु जी तुम दीपक हम बाती। जाकी जोति बरै दिन राती॥
प्रभु जी तुम मोती हम धागा। जैसे सोनहिं मिलत सोहागा।
प्रभु जी तुम स्वामी हम दासा। ऐसी भक्ति करै रैदासा॥